ISSN No. 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 3, अंक : 1, अप्रैल 2016

विगत सौ वर्षों में मध्य प्रदेश का सांगीतिक परिदृश्य

नेहा त्रिपाठी

शोध छात्रा, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सार-संक्षेप

मध्य प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है जिसकी संस्कृति, सभ्यता और संगीत परम्परा को अनेक सम्राटों का संरक्षण प्राप्त हुआ है। ध्रुपद व ख्याल जैसी गायन शैली को इसी प्रदेश के संगीतकारों ने परिष्कृत रूप दिया है। राजा मानसिंह तोमर जैसे राजा ने इस शैली को समृद्ध कर इसे भारतीय संगीत जगत में चिरस्थायी कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने विगत सौ वर्षों में प्रसिद्धि के छुए संगीतकारों के भारतीय संगीत में दिये योगदानों के विषय में विस्तार से बताने का प्रयास किया है। कलाकारों के योगदान का ही परिणाम है कि आज भी वह अपनी परम्पराओं को सुदृढ़ बनाये रखने के लिए भारतीय संगीत को अविस्मरणीय योगदान दिया है।

मुख्य शब्द : मध्य प्रदेश, ध्रुवपद, ग्वालियर, राज-दरबार, मालवा

शोध-पत्र

''किसी भी सभ्यता के आंकलन में उस देश या स्थान की संस्कृति, विकास व कला का विश्लेषण होता है। इस संदर्भ में भारत की युगों-युगों से चली आ रही निरंतर परिवर्तनशील सभ्यता सामने आती है। किसी भी देश या भू-खण्ड पर रहने वाली मानव जाति द्वारा प्रयोग में लाई गई दर्शन, धर्म, संस्कार, सभ्यता, कला भाषा वस्त्र व जीवन दर्शन ही उसकी संस्कृति कहलाती है।[1] मध्य प्रदेश जिसे भारत का हृदय कहा जाता है मध्य भारत में स्थित है राजकुमारों के राज्य मकरई और छत्तीसगढ़ को मिला कर मध्य प्रदेश बना। नागपुर को इसकी राजधानी निर्धारित किया गया। तत्पश्चात् केन्द्रीय भारतीय संस्था द्वारा नये राज्य मध्य प्रदेश, विंध्य प्रदेश और भोपाल बनाए गये। सन् 1956 में मध्य भारत, विंध्य प्रदेश और भोपाल को मध्य प्रदेश में मिला दिया गया। नागपुर के बाम्बे स्टेट में मिल जाने के बाद एक नई राजधानी बनाने की आवश्यकता पड़ी। अत: भोपाल को नई राजधानी घोषित किया गया। मध्य प्रदेश नवम्बर 2000 तक क्षेत्रफल के आधार पर भारत का सबसे बड़ा राज्य था। इस दिन मध्य प्रदेश के कई नगरों को उससे हटा कर छत्तीसगढ़ की स्थापना हुई। म.प्र. की सीमायें महाराष्ट्र, गुजरात, उ.प्र., छत्तीसगढ़ और राजस्थान से मिलती है। म.प्र. में 5 लोक संस्कृतियों का संगम है। ये पांच सांस्कृतिक क्षेत्र निमाड़, मालवा, बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड तथा ग्वालियर है। म.प्र. राज्य में कुल 51 जिले हैं।[2] ''वर्तमान संगीत पर मध्य प्रदेश के अमिट छाप के प्रमाण ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के काल से उपलब्ध होते हैं।'[3]

कला विधाओं की परंपरा में जहां कलाकारों का इतिहास और उनकी कलात्मक उपलब्धियों का समावेश रहता है वहीं पीढ़ी-दर-पीढ़ी कला की प्रयोगिक उन्नति के आधार पर भिन्न-भिन्न शैलियां अपने आप पनपती रहती है। इस दृष्टि से भारतीय संगीत में गायन-वादन और नृत्य विधायें अलग-अलग समय पर विविध रूपों में प्रस्फुटित होती रही है और कालान्तर में यही परम्पराएं संगीत के विभिन्न घरानों के रूप में विकसित होती गई। ''मध्य प्रदेश की पृष्ठभूमि पर कई घरानों का इतिहास देखने को मिलता है जैसे सेनिया घराना, मैहर घराना, इंदौर घराना, ग्वालियर घराना, इन सभी घरानों में सर्वप्रमुख घराना ग्वालियर को ही माना जाता है। क्योंकि एक ओर जहाँ ध्रुपद, ख्याल के स्पष्ट प्रमाण प्राप्त होते है। वही दूसरी ओर एक सुदृढ़ शिष्य परम्परा भी इसी घराने से मिलती है। ग्वालियर घराने का प्रभाव आगरा घराने में भी दृष्टिगोचर होता है।''[4] इसका प्रमाण यह है कि ग्वालियर घराने के संस्थापक नत्थन पीरबख्श सें आगरा घराने के संस्थापक घग्घे खुदाबख्श ने तालीम ली। ग्वालियर घराने के हस्सू खाँ, हद्दू खाँ एवं नत्थू खाँ ने भारतीय संगीत जगत को सुदृढ़ शिष्य परम्परा दी। एक ओर गुलेइमाम, वासुदेव जोशी, बाबा दीक्षित वहीं दूसरी ओर निसार हुसैन खाँ, शंकर राव पण्डित, कृष्ण राव पण्डित। वहीं बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर व उनके शिष्य गुंडुबुआ इंगले, शंकर राव व्यास, नारायण राव व्यास इत्यादि संगीतकारों ने ग्वालियर घराने का प्रचार प्रसार महाराष्ट्र तक किया। इन सभी के प्रयत्नों के फलस्वरूप भारतीय संगीत सम्पूर्ण भारतवर्ष में विद्यमान हो सका। ''मध्य प्रदेश में कई नगर जैसे उज्जैन, इंदौर, देवास, जबलपुर, रीवा, मैहर जैसी रियासतों ने भी हमारे संगीत जगत को कलाकारों के रूप में अमूल्य रत्न दिए हैं। इन्दौर, उज्जैन, देवास आदि ऐसे नगर है जहॉ के संगीत साधकों ने न केवल मध्य प्रदेश को अपितु भारतवर्ष को गौरव प्रदान किया है। मृदंगवादन कला के क्षेत्र को इन्दौर के नाना साहब पानसे ने इतना समृद्ध किया कि उनके नाम से

पानसे घराना चल पड़ा। मध्य प्रदेश में स्थित सुरम्य नगरी देवास का नाम लेते ही संगीत सम्राट उस्ताद रजब अली खॉ, पं. कुमार गन्धर्व के चित्र उभर कर सामने आते है। प्रसिद्ध गायिका चुन्नाबाई भी देवास की रहने वाली थी। भोपाल के आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना होने तथा मध्य प्रदेश की राजधानी बनने के बाद इन संभाग में संगीत कला के प्रचार-प्रसार में आशातीत प्रगति हुई। शाजापुर नगर अति प्राचीन एवं ऐतिहासिक है। नवीन शासकीय महाविद्यालय शाजापुर के प्राचार्य डॉ. शरतचन्द्र परांजपे न केवल प्रान्त अपितु देश के मान्य संगीत शास्त्रीयों में अपना स्थान रखते हैं। कला की दृष्टि में दतिया के महाराजा भवानी सिंह का शासन काल (सन् 1857-1907) ई. स्वर्णयुग कहा जा सकता है। अनेक कलाकारों को दरबार में सम्मान व आश्रय मिला। कुदऊ सिंह जैसे मृदंग वादक ने वहाँ का राज्याश्रय लेकर अपनी मृदंग वादन कला के द्वारा दतिया की ख्याति सर्व प्रसिद्ध की। ये अपने समय के सर्वश्रेष्ठ मृदंग वादक थे। आचार्य कुदऊ सिंह ने मृदंग वादन की शास्त्रीय परम्परा को स्वनिर्मित परनों से विकसित किया। इनकी बनाई हुई परने एक हस्तलिखित पुस्तक में उपलब्ध हैं। मध्य प्रदेश के मैहर नगर ने इतनी ख्याति अर्जित की है इसके परिप्रेक्ष्य में विचार करते ही पद्म विभूषण बाबा अलाउद्दीन खाँ जी का चित्र कल्पना में उभर आता है। मैंहर में एक चमत्कारी शारदा मन्दिर है जिसमें वीणापाणि की प्राचीन प्रतिमा स्थित है। ''सन् 1972 में उस्ताद अलाउद्दीन खाँ के दिवंगत होने से भारतीय संगीत या कहें विश्व संगीत के इतिहास का एक निर्णायक अध्याय परिवर्तित हो गया। संगीत उनके तीर्थ व्यवसाय नहीं एक पूजा थी। संगीत की नई दिशा निर्धारित करने में उस्ताद की संकल्पना की प्राणशक्ति और उनकी रचनात्मक विभूति की बहुमूखता की बात इस तथ्य से सिद्ध होती है कि हमारे पाँच महानतम वाद्य-वादन कला मर्मज्ञ उनके शिष्य हैं : उनके पुत्र अली अकबर खाँ (सरोद), पुत्री अन्नपूर्णा देवी (सुरबहार), दामाद रविशंकर (सितार) और स्वर्गीय पन्ना लाल घोष (बाँसुरी) तथा निखिल बनर्जी (सितार)। उनकी विशाल परम्परा में से ये पाँच नाम का उल्लेख सिर्फ केवल वर्णन के लिए है, उस्ताद एक श्रेष्ठ शिक्षक व पथ प्रदर्शक थे। उन्होंने अपने सभी शिष्यों को एक समान संगीत की शिक्षा दी व एक सफल संगीतज्ञ बनाया।''[6] कई ऐसे कलाकार जिनकी जन्मभूमि मध्य प्रदेश रही है उनके भारतीय संगीत में अभूतपूर्व योगदानों को भुलाया नहीं जा सकता। तानसेन, नायक बैजू, शंकर राव पण्डित, राजा भैया पूंछ वाले, बाला साहेब पूंछवाले, अन्नपूर्णा देवी, लता मंगेशकर इत्यादि ऐसी प्रतिभाये हैं।

''ख्याल गायकी को महाराष्ट्र तक प्रचार प्रसार करने का श्रेय ग्वालियर घराने के कलाकार बालकृष्ण बुवा इचलकरंजीकर जी को है। संगीत विद्या का अपूर्व प्रचार एवं प्रसार करने की प्रबल इच्छा से लगभग 1885-86 में उन्होंने बम्बई में गायन समाज की स्थापना की। समाज को संगीत विद्या का ज्ञान प्राप्त कराने के उद्देश्य से बालकृष्ण बुवा ने लगभग 1885-86 में संगीत का प्रथम मासिक पत्र 'संगीत दर्पण' का प्रकाशन किया। बालकृष्ण बुवा जी के शिष्य विष्णु दिगम्बर जी का योगदान भारतीय संगीत जगत में अग्रणीय है। इनके ही प्रयासों के फलस्वरूप संगीतजन मानस के हृदय व समाज में अपना एक स्थान बना पाया। स्वर्गीय महेश बाजपेयी के अतिरिक्त प्रभाकर गोहदकर, सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट, अरूण बांगरे, जयंत खोत इत्यादि कलाकार हैं जो ग्वालियर की संगीत परम्परा के प्रचार-प्रसार में आज भी कार्यरत हैं।[7]

''केवल घरानेदार शिक्षण पद्धति से ही नहीं अपितु संस्थागत शिक्षण प्रणाली को प्रारम्भ करके संगीत जगत में अभूतपूर्व क्रांति की लहर पैदा कर दी। संगीत जो राजदरबार, गुरुगृह तक ही सीमित था इस बंधन को तोड़कर सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर जन-जन तक इसका प्रसार-प्रचार किया। समाज में गायकों वादकों की दशा इतनी शोचनीय एवं कष्टप्रद थी। संगीत को उच्च वर्ग के लोग अच्छी दृष्टि सें नहीं देखते थे। केवल वर्ग विशेष के मनोरंजन या साधन बनने के बजाय संगीत को सर्वसाधारण व्यक्ति की सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को अभिन्न अंग बनाकर जन समुदाय को संगीत शिक्षा का सुलभ कराई जाये, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सर्वप्रथम लाहौर में रविवार दि. 05 मई 1901 को राजा रामसिंह की हवेली में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की। कालांतर में संगीत का जो व्यापक प्रचार प्रसार हुआ है उसका बीजारोपण भी इसी संस्था ने किया है। [8]

विष्णु दिगम्बर जी ने अपनी सात्तित्व एवं पवित्र वृत्ति से सर्वप्रथम संगीत को उच्च वर्गों के लोगों में प्रतिष्ठित कराया, उनके पश्चात् महिलाओं में भी संगीत ने पूरी रूचि जागृत करने का विचार किया। इस हेतु उन्होंने सर्वप्रथम संगीत की शिक्षा अपने कुटुम्ब के स्त्रियों को दी व उन्हें मंच पर गाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके लिए पं. पलुस्कर जी के उठाये श्रम ही कारणीभूत है। '' उन्होंने भारतीय संगीत को एक वैज्ञानिक स्वरांकन पद्धति दी। यह श्रेय पण्डित जी की सृजनात्मक प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसी प्रकार शिष्य परम्परा विकसित होती गई और आज भी भारतीय संगीत को नवीन दिशा की ओर ले जाने में कार्यरत है। मध्य प्रदेश के संगीतकारों के अतिरिक्त कई ऐसे आयोजन है जो इस परम्परा को विकसित करने में अपना अतुलनीय योगदान दे रहे हैं। इसके कई विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, सांगीतिक संस्थायें, पुरस्कार, समारोह सम्मेलन प्रमुख है। भातखण्डे जी ने 10 जनवरी सन 1918 ई. के शुभ दिन 'श्री माधव म्यूजिक स्कूल'' (माधव संगीत विद्यालय) की स्थापना हुई। सन् 1929 ई. में विद्यालय में सितार, तबला, मृदंग व हारमोनियम की कक्षायें श्री भातखण्डे जी के सूचनानुसार प्रारम्भ की जा सकी तथा इस संस्था का नाम माधव म्यूजिक कालेज (माधव संगीत महाविद्यालय) रखा गया। शंकर गंधर्व महाविद्यालय-ग्वालियर की प्राचीन ख्याल गायन शैली का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार करने के महान उद्देश्य से प्रेरित होकर पं. कृष्ण राव पंडित ने 31 जनवरी 1914 को आपने बम्बई में व्यास संगीत विद्यालय की स्थापना की। मध्य प्रदेश में संगीत नाटक अकादमी से सम्बद्ध अनेक सांस्कृतिक संस्थान जैसे-मध्य प्रदेश लोक कला संस्थान (मण्डला), कालिदास अकादमी (उज्जैन), उस्ताद अलाउद्दीन खॉ अकादमी (भोपाल) मध्य प्रदेश नाटक लोक कला अकादमी (उज्जैन), भारत भवन आदि संस्थाओं का उल्लेख मिलता

है।[9] कई उत्सव व समारोह आयोजित किये जाते हैं जैसे तानसेन समारोह, जो हर वर्ष दिसम्बर माह में आयोजित किया जाता है। विष्णु दिगम्बर पलुष्कर जी की स्मृति में विष्णु दिगम्बर जयन्ती समारोह भी आयोजित किया जाता है। अन्य उत्सव जैसे नृत्य सम्बन्धित उत्सव, अमीर खाँ उत्सव, मालवा उत्सव इत्यादि।

मध्य प्रदेश का शास्त्रीय संगीत अब कलात्मक, प्रयोगात्मक, शैक्षणिक संशोधनात्क अन्य लेखन कार्य तथा प्रचार प्रसारात्मक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण देश में सर्वोच्च स्थान पर आ खड़ा हुआ है।

आज देश-विदेश में ख्याति प्राप्त अनेक कलाकार, उच्चकोटि के प्रयोगवादी संगीतज्ञ, संगीतशास्त्र मर्मज्ञ, कुशल शिक्षा शास्त्री, उच्च उपाधि प्राप्त प्राध्यापक, संगीत के अनेक विध पक्षों पर संशोधन तथा लेखन करने वाले विद्वान और संगीत के प्रचार-प्रसार में सहयोगी समाज के सभी संगीत प्रेमी इस प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की महत्ता बढ़ा रहे हैं।

इन सभी संगीतज्ञों ने मध्यप्रदेश को स्वर-भूमि नहीं अपितु संगीत की स्वर्ग-भूमि का सम्मान प्राप्त कराया है जिससे मध्यप्रदेश का कार्य संगीत रूपी विशाल समुद्र में एक दीपस्तम्भ की भाँति मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है।[10]

अंतत: हम यह कह सकते हैं कि शिल्प हो या कला संगीत हो या साहित्य इस राज्य ने सबसे ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगीत के क्षेत्र में मध्य प्रदेश आज भी अग्रणी है, यह हमारे लिए कम गौरव की बात नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मित्तल, अंजलि, (2010) भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 5
2. https://en.m.wikipedia,org>wiki>Madhya Pradesh Accesed on 12/06/2016
3. तुषार पण्डित, (2002) भारतीय संगीत के महान संगीतकार पं. शंकर पण्डित, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 2
4. बांगरे, अरुण, (2011) ग्वालियर की संगीत परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 208
5. श्रीमाल, प्यारेलाल, (1973) मध्यप्रदेश के संगीतज्ञ, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद भोपाल, पृ. 179
6. नाडकर्णी, मोहन, (1982) मध्यवर्ती मध्यप्रदेश के पन्द्रह संगीतकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 21-23
7. बांगरे, अरुण, (2011) ग्वालियर की संगीत परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 210
8. पेंढारकर, अपेक्षा, (2001) संगीताचार्य बी.आर. देवधर, शिवानी प्रकाशन, जयपुर, पृ. 33
9. बांगरे, अरुण, (2011) ग्वालियर की संगीत परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ. 503
10. श्रीखण्डे, (1995) कला, मध्य प्रदेश में शास्त्रीय संगीत की विकास यात्रा, निर्मल पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 184